पंच महायज्ञ

प्राचीन ऋषियों ने जीवन और जगत् को सुंदर बनाने के लिए मनुष्य जीवन के साथ पंच यज्ञों का विधान किया।

अतः मनुस्मृति(४.२१) में कहा गया है-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत।।

अर्थात्

ब्रह्मयज्ञ,देवयज्ञ,बलिवैश्वदेवयज्ञ,अतिथियज्ञ और पितृयज्ञ का गृहस्थी को कभी भी त्याग नहीं करना चाहिए।

ब्रह्मयज्ञ

संध्योपासना व स्वाध्याय अर्थात् ऋषियों की भांति अपना सब कुछ धन-सम्पत्ति,शरीर-प्राण, मन-बुद्धि हृदय आदि परमात्मा को समर्पित कर उनकी आज्ञा में चलना।

देवयज्ञ

अग्नि में आरोग्यमय,पुष्टि, मंगलकारी आदि द्रव्यों की श्रद्धा व भक्ति से आहुति देकर समस्त पृथ्वी, जल,वायु आदि देवों को प्रसन्न कर स्वयं तथा समस्त जगत् को स्वस्थ व सुन्दर बनाना।

बलिवैश्वदेवयज्ञ

गो-अश्व आदि पशु-पक्षी तथा अन्य प्राणियों को तृप्त करने हेतु भोज्य पदार्थों की अग्नि में आहुति देना।

अतिथियज्ञ

घर में आये भिक्षुक, साधु-संत,विद्वानों का स्वागत-सत्कार करना,भोजन आदि कराना व उनसे ज्ञानोपार्जन करना।

पितृयज्ञ

श्रेष्ठ अपने माता-पिता, गुरु-आचार्यगण तथा अपने से ज्येष्ठजनों की सेवा करना तथा आज्ञाओं का पालन करना।

नित्य यज्ञाग्नि का आधान जहां। धरती का है स्वर्ग वहां।।